Class - VIII 4/4 Chapter - 4
Sub - S.St - ग्रामीण जीवन एवं समाज
(Rural life and Society)

जमींदारों का होता था। इस नियम का जमींदारों ने खूब दुरुपयोग किया। किसान से बढ़ा-चढ़ा कर सख्ती से राजस्व वसूल किया जाने लगा। राजस्व का वह भाग जो सरकार के खजाने में जाना चाहिए उसमें ईमानदारी नहीं थी। जमींदारों के लिए तो लॉटरी खुल गई। जमींदार पहले से तो अमीर थे ही अब और भी अमीर हो गये। कर न अदा करने की सूरत में जमींदारों ने किसानों की जमीन हड़प ली। राजस्व का केवल अब वास्तविक रूप से वाणिज्यिक हो गया। काश्तकारों के अधिकारों की अनदेखी होने लगी। उन्हें राजस्व अदा करने के लिए महाजनों तथा जमींदारों से धन उधार लेना पड़ता था। उस समय सभी काश्तकार पढ़े लिखे नहीं थे। जिसका लाभ उठाकर महाजन और जमींदार दिन प्रति दिन काश्तकारों की जमीनों पर कब्जा कर लेते। फसलें और सरकार की आमदनी कमी हो गई। राजस्व की लूटने की व्यवस्था का वाणिज्यीकरण कर दिया।